ISSN: 2582-7162

लेख

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के राजनैतिक विचार

महेशचन्द गुर्जर[1], शरद कुमार वर्मा[2]

[1]पीएच.डी. शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।
[2]प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

Corresponding author: महेशचन्द गुर्जर[1], पीएच. डी. शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।
Email: Jangalmahesh@gmail.com

प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्ययन में, हमने डॉ। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के राजनैतिक विचारों के विश्लेषण करने का एक प्रयास किया है। हमने उनके शिक्षा दार्शनिकता को समझने के लिए विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया है, जिनमें उनकी व्याख्यान और लेखन की रचनाएं शामिल हैं। निश्कर्शरत यह कहा जा सकता है कि सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने राजनीतिक विचारों में विशेष योगदान दिया। उनका सिद्धांत था कि राजनीति को धार्मिक तत्वों और मानवतावादी दृष्टिकोण से देखना चाहिए। उन्होंने धर्म को समाज के नींव माना और समाज की सहायता के लिए धर्म की महत्ता को बढ़ावा दिया। राधाकृष्णन ने विभिन्न धार्मिक सिद्धांतों के माध्यम से सामाजिक समृद्धि और समाज के उत्थान को बढ़ावा दिया। उनका विचार था कि धर्म राजनीति के लिए निर्णायक होता है और राष्ट्र की अन्य दलों के साथ समझौते की दिशा में धर्म की महत्ता को स्वीकार किया जाना चाहिए। उनका दृष्टिकोण था कि धर्मनिरपेक्षता और समानता समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने सामाजिक समरसता, धार्मिक सहयोग, और विविधता को बढ़ावा दिया ताकि एक समृद्ध और एकत्रित समाज का निर्माण हो सके।

मुख्य शब्द : शिक्षा दर्शन, राजनैतिक विचार, धार्मिकता, सामाजिक समृद्धि

SDES- International Journal of Interdisciplinary Research is a journal of Open access. In this journal, we allow all types of articles to be distributed freely and accessible under the terms of the creative common attribution- non commercial-share. This allows the authors, readers and all scholars and general community to understand, use and to develop non-commercially work, as long as appropriate credit is given and the newly developed work are licensed with similar terms.

How to cite this article: गुर्जर एव कु. डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के राजनैतिक विचार. SDES-IJIR; 2023; 4-6: 725-728
Submitted: 26-December-2023; **Accepted:** 02-January-2023; **Published:** 8-January-2024

भूमिका

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर, 1888 को अंध्र प्रदेश के तिरुतानी गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम सर्वपल्ली वीरस्वामि और माता का नाम सर्वपल्ली शीताम्बरी था। उनके माता पिता ने उनकी शिक्षा को महत्त्व दिया और उन्होंने बचपन से ही वेदों, संस्कृत, और शास्त्रों में रुचि दिखाई। राधाकृष्णन के पिताजी का मृत्यु हो जाने के बाद उनकी पालन–पोषण माताजी ने किया। सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय दर्शनकार, शिक्षाविद्, और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने 20वीं सदी के बहुतेरे हिस्सों में अपना योगदान दिया। वे शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण व्यक्ति रहे और भारतीय संस्कृति को ग्लोबल प्लेटफॉर्म पर प्रस्तुत किया। राधाकृष्णन ने अपनी विशेषता से वेदांत, विद्या भवन, और शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया।

उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कैलेज की स्थापना की और प्रमुख नेतृत्व में भारतीय विश्वविद्यालय के पहले उपाचार्य भी रहे। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे प्रस्तुत किया। राधाकृष्णन को 1954 में भारतीय राष्ट्रपति चुना गया। उनका जन्म दिवस, 5 सितंबर, शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनकी विचारधारा, ज्ञान, और समर्पण की भावना ने उन्हें भारतीय समाज में गहरी प्रतिष्ठा दिलाई। उनका योगदान शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में अमिट रहा।

इस शोधपत्र में शोधकर्ता ने डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के राजनैतिक विचारों को जानने के लिए एक प्रयास किया है

राजनीतिक विचार

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार पुरुष/महिला जीवन में अर्थ और दिशा तलाशती है। अकेले तर्क उसे अर्थ नहीं दे सकता। पुरुष/महिला में अभूतपूर्व दुनिया को पार करने/उससे परे जाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। पूर्णता के लिए एक सहज आवेग है। वह सार्वभौमिक धर्म की भी बात करते हैं, जहां सभी धर्म एक साथ आते हैं और एक–दूसरे के विकास में योगदान करते हैं। प्रामाणिक धर्म "प्रेम का ज्ञान है जो पीड़ित मनुष्य को मुक्ति दिलाता है"। धर्म हठधर्मिता, विश्वास, रीति–रिवाज, संस्कार, पंथ आदि का समूह नहीं है, बल्कि इसे आंतरिक बोध की ओर ले जाना चाहिए। यह संस्थागत नहीं है. उन्होंने एक धर्मनिरपेक्ष भारत/एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में भारत का सपना देखा था। धर्मनिरपेक्षता धर्म को अस्वीकार नहीं कर सकती. धर्मनिरपेक्षता सभी धार्मिक आस्थाओं या किसी भी चीज़ के प्रति सम्मान का एक दृष्टिकोण है, जिसे मनुष्य पवित्र मानता है। यह व्यक्तियों की पवित्रता पर आधारित है। लोकतंत्र का सार दूसरों के प्रति विचार करना, प्रत्येक को पवित्र मानकर उसका सम्मान करना और समृद्ध विविधता और विविधता को प्रोत्साहित करना है। लोकतंत्र का उद्देश्य 'न्यायपूर्ण समाज' है। (राधाकृष्णन, 1947)

महापुरुषों की कीर्ति किसी एक युग तक सीमित नहीं रहती। उनका लोकहितकारी चिन्तन, जीवन मूल्यों को लोकजीवन में संचारित करने की दृष्टि एवं गिरते सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का संकल्प कालजयी होता है और युग–युगों तक समाज का मार्गदर्शन करता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन हमारे एक ऐसे ही प्रकाश–स्तंभ हैं, जिन्होंने अपनी बौद्धिकता, सूझबूझ, व्यापक सोच से भारतीय संस्कृति के संक्रमण दौर में संबल प्रदान किया। वे भारतीय संस्कृति के ज्ञानी, एक महान् शिक्षाविद, महान् दार्शनिक, महा–मनीषी अध्येता, समाज–सुधारक, राजनीतिक चिन्तक एवं भारत गणराज्य के राष्ट्रपति थे। वे समूचे विश्व को एक विद्यालय मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है और यही आदर्श समाज संरचना का आधार है।

कुछ लोग हिन्दुत्ववादी विचारों को हेय दृष्टि से देखते थे और उनकी आलोचना करते थे। उनकी आलोचना को डॉ. राधाकृष्णन ने चुनौती की तरह लिया और हिन्दुवादिता का गहरा अध्ययन करना आरम्भ कर दिया। वे यह जानना चाहते थे कि वस्तुतः किस संस्कृति के विचारों में चेतनता है और किस संस्कृति के विचारों में जड़ता है। तब स्वाभाविक अंतर्प्रज्ञा द्वारा इस बात पर दृढ़ता से विश्वास करना आरम्भ कर दिया कि भारत के दूरस्थ स्थानों पर रहने वाले गरीब तथा अनपढ़ व्यक्ति भी प्राचीन सत्य को जानते थे। इस कारण उन्होंने तुलनात्मक रूप से यह जान लिया कि भारतीय अध्यात्म काफी समृद्ध है और क्रिश्चियन मिशनरियों द्वारा हिन्दुत्व की आलोचनाएं निराधार हैं। इससे इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संस्कृति धर्म, ज्ञान और सत्य पर आधारित है जो प्राणी को जीवन का सच्चा संदेश देती है। भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों का आदर करना सिखाया गया है और सभी धर्मों के लिए समता का भाव भी हिन्दू संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान को समझा और उसके काफी नजदीक हो गए। (वेणुगोपाल एवं कुमार, 2018)

डॉ. राधाकृष्णन की महात्मा गांधी से प्रथम भेंट 1915 में हुई थी। उनके विचारों से प्रभावित होकर राधाकृष्णन ने राष्ट्रीय आन्दोलन के समर्थन में लेख भी लिखे। जुलाई, 1918 में मैसूर प्रवास के समय उनकी भेंट रवीन्द्रनाथ टैगोर से हुई। इस मुलाकात के बाद वह टैगोर से काफी अभिभूत हुए। उनके विचारों की अभिव्यक्ति हेतु डॉ. राधाकृष्णन ने 1918 में 'रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन' शीर्षक से एक पुस्तक लिखी। इसके बाद उन्होंने दूसरी पुस्तक 'द रीन आफ रिलीजन इन कंटेंपॅररी फिलॉसफी' लिखी। इस पुस्तक ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दी। (राधाकृष्णन, 1947)

यह डॉ. राधाकृष्णन की ही प्रतिभा थी कि स्वतंत्रता के बाद इन्हें संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य बनाया गया। वह 1947 से 1949 तक इसके सदस्य रहे। उन्हें एक गैर राजनीतिक व्यक्ति होते हुए भी संविधान सभा का सदस्य गया। जवाहरलाल नेहरू चाहते थे कि राधाकृष्णन के संभाषण एवं वक्तृत्व प्रतिभा का उपयोग 14–15 अगस्त, 1947 की रात्रि को किया जाए, जब संविधान सभा का ऐतिहासिक सत्र आयोजित हो। राधाकृष्णन को यह निर्देश दिया गया कि वह अपना सम्बोधन रात्रि के ठीक 12 बजे समाप्त करें। उसके पश्चात् संवैधानिक संसद द्वारा शपथ ली जानी थी। उन्होंने ऐसा ही किया और ठीक रात्रि 12 बजे अपने सम्बोधन को विराम दिया। आजादी के बाद उनसे आग्रह किया गया कि वह मातृभूमि की सेवा के लिए विशिष्ट राजदूत के रूप में सोवियत संघ के साथ राजनयिक कार्यों की पूर्ति करें। इस प्रकार विजयलक्ष्मी पंडित का इन्हें नया उत्तराधिकारी चुना गया।

डॉ. राधाकृष्णन को स्टालिन से भेंट करने का दुर्लभ अवसर दो बार प्राप्त हुआ। जब वे विदा होने वाले थे, उस समय राधाकृष्णन ने स्टालिन के सिर और पीठ पर हाथ रखा। तब स्टालिन ने कहा था 'तुम पहले व्यक्ति हो, जिसने मेरे साथ एक इंसान के रूप में व्यवहार किया हैं और मुझे अमानव अथवा दैत्य नहीं समझा है। तुम्हारे जाने से मैं दुःख का अनुभव कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम दीर्घायु हो। मैं ज्यादा नहीं जीना चाहता हूँ। इस समय स्टालिन की आँखों में नमी थी। फिर छह माह बाद ही स्टालिन की मृत्यु हो गई। (देबनाथ, 2019)

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.6.2023:725-728

1952 में सोवियत संघ से आने के बाद डॉ. राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति निर्वाचित किए गए। संविधान के अंतर्गत उपराष्ट्रपति का नया पद सृजित किया गया था। नेहरू जी ने इस पद हेतु राधाकृष्णन का चयन करके पुनः लोगों को चौंका दिया। उन्हें आश्चर्य था कि इस पद के लिए कांग्रेस पार्टी के किसी राजनीतिज्ञ का चुनाव क्यों नहीं किया गया। डॉ. राधाकृष्णन ने अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। वे पेरिस में यूनेस्को नामक संस्था की कार्यसमिति के अध्यक्ष भी रहे। यह संस्था 'संयुक्त राष्ट्र संघ' का एक अंग है और पूरे विश्व के लोगों की भलाई के लिए अनेक कार्य करती है। वे 1949 से सन् 1952 तक रूस की राजधानी मास्को में भारत के राजदूत पद पर रहे। भारत रूस की मित्रता बढ़ाने में उनका भारी योगदान रहा था। राष्ट्रपति बनने के बाद राधाकृष्णन ने भी पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की भाँति स्वैच्छिक आधार पर राष्ट्रपति के वेतन से कटौती कराई थी। उन्होंने घोषणा की कि सप्ताह में दो दिन कोई भी व्यक्ति उनसे बिना पूर्व अनुमति के मिल सकता है। इस प्रकार राष्ट्रपति भवन को उन्होंने सर्वहारा वर्ग के लिए खोल दिया। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद की तुलना में राधाकृष्णन का कार्यकाल काफी कठिनाइयों से भरा था। इनके कार्यकाल में जहाँ भारत–चीन युद्ध और भारत–पाकिस्तान युद्ध हुए, वहीं पर दो प्रधानमंत्रियों की पद पर रहते हुए मृत्यु भी हुई। उनके कार्यकाल में ही पंडित नेहरू और शास्त्रीजी की प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए मृत्यु हुई थी। लेकिन दोनों बार नये प्रधानमंत्री का चयन सुगमतापूर्वक किया गया। जबकि दोनों बार उत्तराधिकारी घोषित नहीं था और न ही संवैधानिक व्यवस्था में कोई निर्देश था कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाना चाहिए। सचमुच उनका जीवन एक प्रेरणा है, एक रोशनी है, इस रोशनी को साथ रखते हुए आदर्श समाज रचना के संकल्प को सचेतन करने के लिये हम अग्रसर बने, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। (मिश्रा, 2017)

डॉ. राधाकृष्णन के लिए धर्म दर्शन था और दर्शन धर्म था। उन्होंने विभिन्न धर्मों और दर्शन प्रणालियों का अध्ययन किया और अपनी पुस्तक के माध्यम से दुनिया के सामने सभी धर्मों के पीछे के धर्म और सभी दर्शनों के पीछे के सामान्य दर्शन को प्रस्तुत किया। उन्होंने धर्म के बारे में व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया और कहा कि नैतिकता धर्म का अभिन्न अंग है। सच्चे धर्म ने हमें कभी भी दूसरे इंसानों से नफरत करने के लिए नहीं कहा। सभी मनुष्य एक ही परिवार के थे और यदि कोई इस एकता में विश्वास करता, तो कभी कोई युद्ध नहीं होता और हर जगह सामाजिक समानता कायम होती। यही डॉ. राधाकृष्णन के समस्त लेखन का सार था। उन्होंने धर्म को जोड़ने वाली शक्ति के रूप में माना जो व्यक्तियों के बीच खोए हुए रिश्ते को बहाल करने में मदद करता है। उन्हें उस धर्म से नफ़रत थी जो जादू–टोना, जादू–टोना और अंधविश्वास से युक्त था। अन्य धर्मों एवं मान्यताओं के प्रति उनका सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण था।

इसी प्रकार उन्होंने दावा किया कि दर्शन का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को सांसारिकता से ऊपर उठाना है। उन्होंने कहा, ''..... यदि सही ढंग से अनुसरण किया जाए, तो यह (दर्शन) हमें विफलता के खिलाफ, दुख और विपत्ति के खिलाफ, ऊब और हतोत्साह के खिलाफ हथियार देता है'' (राधाकृष्णन, 1947)। निस्संदेह, डॉ. राधाकृष्णन एक साहसी दार्शनिक थे। उन्होंने तार्किकता एवं संदेह को महत्व दिया। उन्होंने कभी भी अपने धर्म का बचाव नहीं किया बल्कि हमेशा उस भावना का समर्थन किया जो सभी धर्मों से प्रतिरक्षित थी।

इस प्रकार, उन्होंने दर्शन और धर्म को यह कहते हुए जोड़ा, "हम संदेह करने की अपनी इच्छा के अनुपात में अधिक धार्मिक बनते हैं, न कि विश्वास करने की हमारी इच्छा के अनुपात में..." (राधाकृष्णन, 1953)। यह आवश्यक है कि हमें धार्मिक मान्यताओं को तर्क की जांच के अधीन रखना चाहिए। यह स्पष्ट है कि डॉ. राधाकृष्णन की रुचि केवल धर्म दर्शन में थी और दार्शनिक एवं धार्मिक अध्ययन ही डॉ. राधाकृष्णन के जीवन का मूल था। उनका मत था कि मानव जाति को धर्म द्वारा सामान्य आध्यात्मिक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए। यह सामान्य भावना सभ्यता के अस्तित्व में मदद कर सकती है।

राजनीति के प्रति डॉ. राधाकृष्णन का दृष्टिकोण एक तर्कवादी का था। उन्होंने राजनीति को धर्म के माध्यम से देखा और लोकतंत्र को सर्वोच्च धर्म माना क्योंकि यह प्रत्येक नागरिक को विचारों की स्वतंत्रता और अंतरात्मा की स्वतंत्रता की गारंटी देता है। उन्होंने कहा, ''मैं लोकतंत्र में बहुत विश्वास रखता हूं, इसलिए नहीं कि यह एक अच्छी राजनीतिक व्यवस्था है बल्कि इसलिए कि यह सर्वोच्च धर्म है'' (राधाकृष्णन, 1947)। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि व्यक्ति की स्वतंत्रता को कभी दबाया नहीं जाना चाहिए। किसी भी समाज में व्यक्ति को अपने मन और आत्मा को विकसित करने में सक्षम होना चाहिए और यह तभी संभव था जब देश में लोकतंत्र हो।

सत्ता की राजनीति में रहते हुए भी वे कभी भी संकीर्ण विचारधारा वाले राजनेताओं के सामने नहीं झुके और हमेशा भारत की जनता के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया। उनके पास कोई कठोर राजनीतिक बुद्धि नहीं थी और उन्होंने कभी कोई राजनीतिक दर्शन विकसित नहीं किया था, लेकिन उन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अत्यधिक महत्व दिया। उन्होंने हमेशा आर्थिक बेहतरी और सामाजिक स्थिति में समानता के लिए काम किया। वह महात्मा गांधी की सत्याग्रह की अवधारणा के भी बहुत प्रशंसक थे। इस प्रकार उन्होंने यह कहकर लोकतंत्र का सही अर्थ दिया कि "लोकतंत्र सरकार की एक प्रणाली से कहीं अधिक है, यह जीवन जीने का एक तरीका है।" (राधाकृष्णन, 1953)

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.6.2023:725-728

निष्कर्ष

सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने राजनीतिक विचारों में विशेष योगदान दिया। उनका सिद्धांत था कि राजनीति को धार्मिक तत्वों और मानवतावादी दृष्टिकोण से देखना चाहिए। उन्होंने धर्म को समाज के नींव माना और समाज की सहायता के लिए धर्म की महत्ता को बढ़ावा दिया। राधाकृष्णन ने विभिन्न धार्मिक सिद्धांतों के माध्यम से सामाजिक समृद्धि और समाज के उत्थान को बढ़ावा दिया। उनका विचार था कि धर्म राजनीति के लिए निर्णायक होता है और राष्ट्र की अन्य दलों के साथ समझौते की दिशा में धर्म की महत्ता को स्वीकार किया जाना चाहिए। उनका दृष्टिकोण था कि धर्मनिरपेक्षता और समानता समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने सामाजिक समरसता, धार्मिक सहयोग, और विविधता को बढ़ावा दिया ताकि एक समृद्ध और एकत्रित समाज का निर्माण हो सके।

वित्तीय सहायता और प्रायोजन : शून्य

हितों का टकराव : हितों का कोई टकराव नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बालसुब्रमण्यन, आर., और चारी, एस. श्रीनिवासा (2008)। सर्वपल्ली राधाकृष्णन। दिल्लीः विक्रम प्रकाशन।
2. देबनाथ, पी० (2019). ए पीप इन टू द फिलॉसोफी ऑफ डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन रिलेटिंग टू एजूकेशन। परमाना रिसर्च जर्नल, 9(6), 1235–1241।
3. मिश्रा, कुलदीप (2017). डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक उपागम का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन आल सब्जेक्ट्स इन मल्टी लेंगुएजिज, 5(12), 107–112।
4. राधाकृष्णन, एस. (1953)। प्रमुख उपनिषद. न्यू योर्कः हार्पर एंड रो।
5. राधाकृष्णन, एस. (1962)। सर्वपल्ली राधाकृष्णनः जीवनी। मुंबईः ओके पब्लिकेशंस।
6. वेणुगोपाल, जी०, एवं कुमार, एल०यू० (2018). रेलीवेन्स ऑफ लाईफ वर्क्स एण्ड फिलॉसोफी ऑफ सर्वपल्ली राधाकृष्णन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एनालिटिकल रिव्यूज, 5(4), 299–303।